अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी माहेश्वरी संगठन

महासभा की सशक्त भुजा के रूप में माहेश्वरी महिला संगठन का गठन १६७६ में नागपुर में महासभा के अधिवेशन के समय स्वर्गीय रामगोपाल माहेश्वरी की प्रेरणा से किया गया। कर्मठ व्यक्तित्व की धनी श्रीमती ज्ञानकुमारी जी हेडा संगठन की प्रथम अध्यक्षा बनी। महिलाओं को संगठित करके उन्हें जागृति की ओर अग्रसर करने का कार्यभार श्रीमती हेडा ने संभाला व मंत्री के रूप में श्रीमती सरोज बजाज ने इस कार्य में सहयोग दिया। इस सत्र को प्रथम सत्र का दर्जा दिया गया।

सन् १६८२ में इन्दौर के श्री हरिकिशन जी मुछाल महासभा के अध्यक्ष बने, ग्वालियर की अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्ष पुनः श्रीमती ज्ञानकुमारी जी हेडा बनी व महामंत्री पद संभाला श्रीमती मनोरमा लड्ढा ने। अध्यक्ष और महामंत्री द्वारा महासभा के कार्यकारी मण्डल के सदस्यों को परिपत्र भेजकर स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ता बहनों तक पहुँचने का अथक प्रयास रहा। सभी भाईयों का संगठन द्वारा रक्षासूत्र भेजकर स्थानीय संगठन के बनाने, उन्हें राष्ट्रीय पहचान दिलाने में आशाजनक सफलता मिली।

महिलाओं को संगठित करके उन्हें सक्रिय एवं जागरूक बनाने हेतु ३१ अक्टूबर १६८२ को अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन का प्रथम अधिवेशन ग्वालियर में आयोजित किया गया। खुले अधिवेशन की मुख्य अतिथि डा. सुश्री सरस्वती जी पंडित दुदानी रही। समय की मांग के अनुसार अधिवेशन में दहेज व महिलाओं की हत्या व आत्महत्या के विरोध में प्रस्ताव पारित किया। अध्यक्ष श्रीमती ज्ञानकुमारी जी ने एवं महामंत्री श्रीमती मनोरमा जी लड्ढा के निरंतर पत्राचार एवं प्रथम महिला अधिवेशन से संगठन की एक राष्ट्रीय पहचान बनी। नये स्थानीय संगठनों की स्थापना करना, विद्यार्थियों को जाजू ट्रस्ट से छात्रवृत्ति दिलाना, महिलाओं को रोजगार हेतु सिलाई मशीन या अन्य साधनों की व्यवस्था करना, गरीब कन्याओं का विवाह आदि कार्य संगठन द्वारा किये गये। इस सत्र में दिल्ली, अमरावती, भोपाल, जयपुर, रांची, पंचमढ़ी, चेन्नई, इन्दौर में महासभा के साथ ही महिलाओं की भी बैठकें हुई।

तृतीय सत्र

१६८५ में इन्दौर में माहेश्वरी महासभा का महाधिवेशन हुआ, जिसमें महिलाओं की पूरी भागीदारी रही। सादा जीवन, उच्च विचार वाली विदुषी प्रो. श्रीमती पद्मा जी मूँदड़ा, अमरावती ने महिला संगठन का अध्यक्ष पद संभाल कर संगठन को एक नई दिशा प्रदान की। अध्यक्षा की सूझबूझ, कड़ी मेहनत व समाज प्रेम से महिला संगठन ने नए आयाम स्थापित किये। महामंत्री श्रीमती मनोरमा जी लड्ढा एवं पदाधिकारियों द्वारा भ्रमण कार्य आरंभ किया गया, जिससे स्थानीय स्तर पर जाग्रति आए व स्थानीय संगठनों का गठन हो।

चतुर्थ सत्र

१६८१ में तिरुपति अधिवेशन से इस सत्र का प्रारंभ हुआ। श्रीमती पद्मा देवी मूँदड़ा को पुनः अध्यक्ष पद का भार सौंपा गया व महामंत्री के लिए सक्रिय युवा कार्यकर्ता श्रीमती लता जी लॉहोटी, पूना का मनोनयन किया गया। महिलाओं को आत्म निर्भर बनाने हेतु महिला औद्योगिक कार्यो का महत्व दिया गया। स्थानीय व प्रादेशिक संगठन बनाये गये। पदाधिकारियों के भ्रमण से महिलाओं में जागृति आई व महिला संगठन का विधान बनाया गया।

पंचम सत्र

१६६४ में जैसलमेर अधिवेशन के समय अ.भा. महिला संगठन की अध्यक्षा श्रीमती मनोरमा जी लड्ढा-ग्वालियर एवं महामंत्री श्रीमती लता जी लॉहोटी पुनः बनीं। 'जागृति लाओ-संगठन बनाओ' के घोष वाक्य के साथ सत्र प्रारंभ हुआ। पाँच समितियों के गठन एवं संगठन का मुखपत्र प्रारंभ करने का निर्णय लिया। समितियों के तहत संगमनेर में 'कार्यकर्ता स्वाध्याय शिविर', इन्दौर में 'औद्योगिक मेला' एवं हैदराबाद में युवा संगठन के साथ 'आपणो उत्सव' कार्यक्रम हुए। सादगीपूर्ण बैठक करना, कुमकुम चावल से तिलक लगाकर एक फूल से स्वागत करना एवं स्मृति-चिह्न नहीं लेने जैसे महत्वपूर्ण निर्णयों का अमल हुआ।

षष्टम् सत्र

७-३-१६६८ को इंचलकरंजी में सर्वसम्मति से श्रीमती लता लॉहोटी-पूना को अध्यक्ष व श्रीमती गीताजी मूँदड़ा-इन्दौर के महामंत्री पद के लिए मनोनीत किया गया। 'संस्कार जगाओ-संस्कृति बचाओ' का प्रेरणा स्त्रोत नारा देकर कार्यकर्ताओं को दिशा प्रदान की। राष्ट्रीय संगठन द्वारा निर्देशित कार्यक्रम औद्योगिक मेला चेन्नई में, निबंध प्रतियोगिता, पॉकेट डायरेक्टरी का प्रकाशन, नागपुर में कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर, कोलकाता में सतरंगी झंकार-२०००, पुणे में उद्योग व्यवसाय व प्रबंधन प्रशिक्षण शिविर 'निखार-२०००', सामाजिक समस्याओं के चिन्तन हेतु पोस्टर प्रतियोगिता आदि के सफलतापूर्वक आयोजन हुए। बिहार में बाढ़ पीड़ितों की सहायता तथा गुजराज भूकम्प के समय युवा संगठन के साथ मिलकर आवास योजना में

योगदान दिया। सभी छः समितियों के माध्यम से कार्य हुए। प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलल सन् २००० में शिकागो (अमेरिका), में महामंत्री श्रीमती गीता जी मूँदड़ा व उद्योग समिति की संयोजक श्रीमती कान्ता जी सोढानी ने भारत का प्रतिनिधित्व किया।

सप्तम् सत्र

१३-१४ जुलाई २००२ को उदयपुर में सप्तम् सत्र का प्रारम्भ हुआ। श्रीमती गीता जी मूँदड़ा, इन्दौर ने अध्यक्ष पद की शपथ ली तथा नागपुर निवासी श्रीमती लीलाजी सारडा को महामंत्री बनाया गया। करीब डेढ़ वर्ष बाद श्रीमती लीलाजी के असामयिक निधन से रिक्त हुए स्थान पर सूरत निवासिनी श्रीमती विमला जी साबू को महामंत्री मनोनीत किया गया। 'आध्यात्म जगाओ-नैतिकता बढ़ाओ' के घोष वाक्य के साथ सप्तम् सत्र की सक्रियता आगे बढ़ी। मुखपत्र का रजिस्ट्रेशन होने पर नव नारी जागृति से नाम परिवर्तित होकर 'माहेश्वरी महिला' हुआ। पूरे सत्र में पाँच कार्यकारी मण्डल व सात कार्यसमितियों की बैठकें व ग्यारह कार्यक्रम हुए। टेलीफोन विवरणिका, स्वागत लहरी, माण्डणा, 'जीवन-प्रवाह' एवं छः समितियों की जानकारी बतौर छ पुस्तिका, कुल दस पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। पर्याप्त भ्रमण व पत्राचार हुआ। महामंत्री श्रीमती विमला जी साबू ने अमेरिका प्रवास के दौरान वहाँ भी मीटिंग की।

अष्टम् सत्र के रचनात्मक कार्यक्रमों के साथ राष्ट्रीय बैठकें

९-१०-११ अप्रैल २००६ को अष्टम् सत्र की प्रथम कार्यसमिति बैठक एवं राष्ट्रीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर ''उड़ान-२००६'' का आयोजन कोलकाता प्रदेश के अन्तर्गत हावड़ा अंचल में किया गया।

९-१०-११ सितम्बर २००६को मुम्बई में अष्टम् सत्र की द्वितीय कार्यकारिणी बैठक एवं राष्ट्रीय ''कविता पाठ प्रतियोगिता'' का आयोजन सरिता संगम-२००६, मुम्बई प्रदेश अन्तर्गत मुम्बई में किया गया।

६-७ जनवरी २००७ को अष्टम् सत्र की द्वितीय कार्यसमिति बैठक तथा पश्चिमांचल का सम्मेलन ''उमंग'' का छत्तीसगढ़ के रायपुर में आयोजित किया गया।

१६ से २० अप्रैल २००७ को उत्तरांचल के ऋषिकेश में अष्टम् सत्र के तृतीय कार्यकारिणी बैठक तथा आध्यात्मिक शिविर ''आराधना-२००७'' का अविस्मरणीय आयोजन सम्पन्न हुआ।

दिल्ली में अष्टम् सत्र की तृतीय कार्यसमिति बैठक ''मणिपुष्पक'' का आयोजन हुआ।

भीलवाड़ा में २९ दिसम्बर २००७ को कार्यकारी मण्डल की बैठक आपसी धारा अधिवेशन के साथ में सम्पन्न हुई।

१ से १३ सितम्बर तक सिंगापुर, मलेशिया विदेश यात्रा ''विजन-२००७' का १३५ यात्रियों के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।